Bodhi-Path Year 2023 July Issue Volume 25 Page No 23-26

बौद्धदर्शन में सम्यक्दृष्टि

डॉ संघमित्रा बौद्ध (सम्पादक)

ई–मेल : sanghmb@gamil.com

बौद्धदर्शन में 'सम्यक्दृष्टि' का विशिष्ट महत्व है। सम्यक्दृष्टि से ही कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। बौद्धदर्शन में आर्य अष्टांगिक मार्ग को दुःख निरोधगामी मार्ग कहा गया है। यह मार्ग आठ अंगो से समन्नागत है तभी इसका नाम आर्य अष्टांगिक मार्ग है। यह मध्यमा प्रतिपदा भी है। इस आर्य अष्टांगिक मार्ग में प्रथम सम्यक्दृष्टि है। यहाँ दृष्टि से पूर्व 'सम्यक्' शब्द प्रयुक्त है क्योंकि दृष्टि या दर्शन मिथ्या भी होता है। 'सम्यक्' शब्द से मिथ्यादृष्टि का परिहार हो जाता है।

सम्यक्दृष्टि – जीव, अजीव आदि सभी तत्वों को यथार्थ ग्रहण करने वाली दृष्टि सम्यक्दृष्टि है। यह दृष्टि जिसे प्राप्त होती है, वह सम्यक्दृष्टि कहलाता है। सम्यक्दृष्टि जिस व्यक्ति को प्राप्त हो जाती है उसे निर्वाणगमन का आरक्षण पत्र उपलब्ध हो जाता है। सम्यकत्व एक प्रकार से आत्मविकास की सुदृढ़ पृष्ठभूमि है, जिस पर आरूढ़ होकर ही व्यक्ति पूर्ण विकास की स्थिति तक पहुंच सकता है। प्रमुख रूप से दृष्टि तीन प्रकार कर बतलाई गई है। सम्यक्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सत्कायदृष्टि। नश्वर शरीर को आत्मा मानकर उसके प्रति मोह रखता है, वह सत्कायदृष्टि है।[1]

मिथ्यादृष्टि – जो दृष्टि जीव, अजीव आदि तत्वों को अयथार्थ ग्रहण करता है वह मिथ्यादृष्टि है। यह दृष्टि जिस व्यक्ति को होती है वह 'मिथ्यादृष्टि' कहलाता है। जिस प्रकार धतूरा आदि फल के खाने वाले व्यक्ति की दृष्टि दूषित हो जाने से वह वस्तुओं को विपरित देखता है, उसी प्रकार मोह से वशीभूत जो पदार्थों को विपरित देखता है, वह मिथ्यादृष्टि कहलाती है।[2]

बौद्ध परम्परा में सम्यक्दृष्टि – सम्यक् दृष्टि है सम्यक् दर्शन। भगवान् बुद्ध का दर्शन सम्यक्दृष्टि मूलक था। यहाँ सम्यक्दृष्टि से तात्पर्य यथार्थ ज्ञान से है, इसमें हम बुद्ध के दर्शन को पाते है। यह उनका यथार्थ ज्ञान चार आर्यसत्यों के रूप में था, जिसमें धर्म दर्शन सभी प्रत्ययों का समावेश हो जाता है। अर्थात् जो अकुशल को जानता है, अकुशल मूल को जानता है। कुशल को जानता है, कुशल मूल को जानता है वह सम्यक् दृष्टि है। जो धर्म स्वभाव को जानता है वह सम्यक् दृष्टि है। यह धर्म स्वभाव क्या है ?

बुद्ध के दर्शन में तिलक्खण की देसना सभी धर्मों के सत्य स्वभाव को प्रकाशित करता है। तिलक्खण है तीन लक्षण। किसका लक्षण ? धर्म का। जो कुछ भी धर्म है उसका स्वभाव ही लक्षण है। इसी के आधार पर भगवान् बुद्ध द्वारा कहा गया है –

सभी संस्कार अनित्य है,

सभी संस्कार दुःख है,

सभी धर्म अनात्म है।

जो कुछ भी धर्म लोक में है। वे दो प्रकार के है– संस्कृत और असंस्कृत । घर, पुस्तक, वस्त्र इत्यादि धर्म निर्मित हैं। अनेक धर्मों से वे सम्भूत (जुड़ के) हैं। तभी ये धर्म संस्कृत हैं। निर्वाण किसी भी पदार्थ से निर्मित नहीं हैं। तभी निर्वाण असंस्कृत है। इन धर्मों के स्वभाव का कथन तिलक्खण के द्वारा किया गया है।

1. सभी संस्कार अनित्य है – इस कथन के द्वारा कहा गया है कि जो कुछ भी संस्कृत धर्म हैं वे अनित्य हैं। सभी संस्कार क्षण–क्षण उत्पन्न होते हैं एवं विनष्ट होते हैं जो उत्पन्न होता है वह विनष्ट हो जाता है। सभी संस्कृत धर्मों का यही स्वभाव है।
2. सभी संस्कार दुःख है – अर्थात् सभी संस्कार दुक्खजनक है। मनुष्य वस्तुओं के प्रति तृष्णा रखता है। यदि वह उस वस्तु को प्राप्त नहीं करता तो उसे अत्यन्त दुक्ख होता है। इस तरह जहाँ हम तृष्णा करते हैं, मोह उत्पन्न करते हैं वह हमसे क्षण–क्षण दूर

चला जाता है। जिन्हें हम प्रिय रूप में ग्रहण करते हैं, वे भी अनित्य है। तभी भगवान् के द्वारा कहा गया है ''सभी संस्कार दुःख है। ''

3. सभी धर्म अनात्म है – अर्थात् सभी धर्म आत्म एवं आत्मयीयभाव से विरहित है। बुद्ध ने कहा है कि जिन्हें हम पुरूष, पुद्गल या मनुष्य कहते हैं वे पंचस्कन्धों के समूह हैं, वे पंचस्कन्ध हैं – रूपस्कन्ध, वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध। सभी परिणाम धर्म उत्पन्न होते हैं एवं विनष्ट होते हैं उनमें न कोई स्कन्ध आत्मा है न उनमें आत्मा है। निर्वाण अज्ञात एवं अनिर्मित है वहाँ भी आत्मा नहीं है। इसलिए सभी धर्म अनात्म है।

   इस प्रकार भगवान् बुद्ध द्वारा त्रिलक्खण प्रकासित है। उसको जानकर मनुष्य तृष्णा को विनष्ट करता हैं तृष्णा को विनष्ट करके वह परम सुख निर्वाण का साक्षत्कार करता है।

वस्तुतः सम्यक्दृष्टि का क्षेत्र विस्तृत है। संक्षेप में बुद्ध की शिक्षा को यथार्थ रूप में धारण करना सम्यक्दृष्टि है। इसकी व्याख्या करते हुए भदन्त आनन्द कौशल्यायन जी ने कहा है –

''दुराचरण को दुराचरण समझना। सदाचरण को सदाचरण समझना। लोभ, मोह, द्वेष का मूल कारण समझना। अलोभ, अमोह, अद्वेष को सदाचरण का मूल कारण समझना। चार आर्यसत्यों को समझना। दस संयोजनो से मुक्त होन का प्रयास करना। आत्मा को लेकर किसी दृष्टि में नहीं लगना। प्रतीत्यसमुत्पाद के ज्ञान को यथार्थ रूप में समझाना सम्यक्दृष्टि है।''[3]

सम्यक्दृष्टि के साथ आर्य अष्टांगिक मार्ग तथा प्रतीत्यसमुत्पाद का पालन करना अनिवार्य है। जिस प्रकार कोई थका व्यक्ति मार्ग में कुआं पा जाए, लेकिन बाल्टी एवं डोर के अभाव में प्यास नहीं बुझा सकता है।[4] प्रतीत्यसमुत्पाद के ज्ञान को आर्यज्ञान कहा गया है, अच्छी तरह देखा जाना कहा गया है।[5] प्रतीत्यसमुत्पाद के ज्ञान के बाद आर्यश्रावक की दृष्टि सम्यक् दर्शन सम्पन्न सद्धर्म को प्राप्त, शैक्ष्य, ज्ञानों से युक्त, धर्म के स्रोत में आया हुआ, अमृत के द्वार पर खड़ा हुआ कहा जा सकता है। श्रमण और ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी होता है।[6] सम्यक्दृष्टि को निर्वाण की ओर ले जाने वाला कहा गया है।[7]

इस प्रकार हम देखते हैं कि बौद्धदर्शन में 'सम्यक्दृष्टि' का विशेष महत्व है। सम्यक्दृष्टि हमें सही विचार देता है। जैसे गन्तव्य में पहुँचने के लिए पहले मार्ग चुना जाता है। यदि मार्ग ही गलत चुना जाएगा, तो गन्तव्य तक नहीं पहँचा जा सकता। इसलिए सम्यक्दृष्टि के महत्व को स्वीकृत करके यथार्थज्ञान को सम्यक्दृष्टि माना गया है।

सन्दर्भ संकेत :

1. तीर्थंकर, बुद्ध और अवतार—एक अध्ध्यन, डॉरमेश चन्द्र गुप्त
2. पालि एवं प्रकृत विद्या—एक तुलनात्मक अध्ययन, डॉ विजयकुमार जैन
3. बौद्ध धर्म : एक बुद्धिवादी अध्ययन, भदन्त आनन्द कौशल्यायन
4. संयुत्तनिकाय पालि, भाग 2, पृ 98—101
5. वही पृ 58
6. वही पृ 38—40
7. संयुत्तनिकाय पालि, भाग 4, पृ 162